CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

BPSC 47वीं से 69वीं

मुख्य परीक्षा

सामान्य अध्ययन

हल प्रश्न-पत्र

प्रथम एवं द्वितीय प्रश्न-पत्र

47वीं-69वीं BPSC
मुख्य परीक्षा हल प्रश्न-पत्र
सामान्य अध्ययन
प्रश्नोत्तर रूप में

प्रथम एवं द्वितीय प्रश्न-पत्र

प्रश्नों के उत्तर, प्रश्न वर्ष और तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था व परिस्थितियों को ध्यान में रखकर दिये गए हैं। वर्तमान समय में सरकार की नीति, मंशा व कार्यप्रणाली के अनुरूप इन प्रश्नों के उत्तरों में परिवर्तन हो सकता है, अतः इस पुस्तक के माध्यम से परीक्षार्थी प्रश्नों के प्रति अपना दृष्टिकोण वर्तमान संदर्भ में तैयार करें तथा स्वयं उत्तर लेखन अभ्यास करने का प्रयास करें।

संपादक
एन. एन. ओझा

हल
क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

अनुक्रमणिका

- 69वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा : सामान्य अध्ययन प्रथम प्रश्न-पत्र 01-12
- 69वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा : सामान्य अध्ययन द्वितीय प्रश्न-पत्र 13-23
- 68वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा : सामान्य अध्ययन प्रथम प्रश्न-पत्र 24-36
- 68वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा : सामान्य अध्ययन द्वितीय प्रश्न-पत्र 37-49
- 67वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा : सामान्य अध्ययन प्रथम प्रश्न-पत्र 50-61
- 67वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा : सामान्य अध्ययन द्वितीय प्रश्न-पत्र 62-68

सामान्य अध्ययन, प्रथम प्रश्न-पत्र

- भारत का आधुनिक इतिहास और भारतीय संस्कृति 01-43
- राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय महत्व का वर्तमान घटना चक्र 44-83
- सांख्यिकी विश्लेषण, आलेख और चित्रण 84-120

सामान्य अध्ययन, द्वितीय प्रश्न-पत्र

- भारतीय राजव्यवस्था 121-155
- भारतीय अर्थव्यवस्था और भारत का भूगोल 156-192
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 193-228

69वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा

सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र I

खंड - I

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए:

1. (a) भारतीय परिषद् अधिनियम, 1892

उत्तर: 1892 का भारत परिषद् अधिनियम औपनिवेशिक भारत के संवैधानिक सुधारों की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण कदम था। भारतीयों में आक्रोश की भावनाओं को दबाने के लिये ब्रिटिश सरकार ने 1861 का अधिनियम पारित किया, लेकिन इस अधिनियम में कई व्यावहारिक दोष थे, जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने भारतीय परिषद् अधिनियम, 1892 पारित किया। इस अधिनियम द्वारा अप्रत्यक्ष चुनाव प्रणाली लागू करके भारतीयों में व्याप्त असंतोष को काफी हद तक दूर करने का प्रयास किया गया।

भारतीय परिषद् अधिनियम, 1892 के प्रावधान निम्नलिखित है:

- केन्द्रीय एवं प्रांतीय विधान परिषदों की संख्या में वृद्धि की गयी। केन्द्रीय विधान मंडल में कम से कम 10 और अधिक से अधिक 16 अतिरिक्त सदस्यों की नियुक्ति की गयी।
- इस अधिनियम द्वारा केन्द्रीय तथा प्रांतीय विधान परिषदों की शक्तियों में वृद्धि की गयी कुछ प्रतिबंधों के साथ परिषदों को वार्षिक वित्तीय बजट पर बहस करने का अधिकार भी दिया गया।
- सार्वजनिक हित के मामलें में 6 दिन पूर्व सूचना देकर उन्हें प्रश्न पूछने का अधिकार दिया गया।
- इस एक्ट में सबसे महत्वपूर्ण प्रावधान निर्वाचन की शुरुआत थी। हालांकि निर्वाचन की प्रणाली अप्रत्यक्ष थी और निर्वाचित सदस्यों को मनोनीत की संज्ञा दी जाती थी।
- अधिनियम के उपरोक्त उपबन्धों पर जब हम दृष्टि डालते है तो पाते है कि अधिनयम भारतीय जन भावना के अनुरूप नही था। क्योंकि इन परिषदों में चुने हुए सदस्य बहुत कम थे और वो अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित होते थे, इसलिये वे जनता के वास्तविक प्रतिनिधि नहीं थे।
- सरकारी अधिकारियों का इन परिषदों में बहुमत था इसलिये सरकार चुने हुए सदस्यों की ओर विशेष ध्यान नहीं देती थी, बल्कि सरकारी अधिकारियों की सहायता से अपनी इच्छा के अनुरूप कार्य करती थी। इन सभी खामियों के बावजूद अधिनियम भारतीय संवैधानिक इतिहास के विकास में एक महत्वपूर्ण कड़ी साबित हुआ था क्योंकि यह अधिनियम कांग्रेस के उदारवादियों की पहली विजय थी।

1. (b) संथाल विद्रोह

उत्तर: संथाल विद्रोह (1855-56) ब्रिटिश शासनकाल में जमींदारों तथा साहूकारों द्वारा किये गये अत्याचारों के खिलाफ आदिवासियों का प्रथम सशक्त जन विद्रोह था।

विद्रोह के कारण

- **आर्थिक कारण:** संथाल परगना में प्रचलित झूम कृषि पर प्रतिबंध लगा दिया गया और भूराजस्व की दरें तीन गुना कर दी गयी।
- **आदिवासी शोषण:** संथाल जनजाति कृषि और वनों पर निर्भर थी, लेकिन जमींदारी प्रथा ने इन्हें इनकी ही भूमि से बेदखल करना शुरू कर दिया था। अंग्रेज समर्थित जमींदार पूरी तरह से संथालों का शोषण कर रहे थे और साथ ही कंपनी ने कृषि लगानों को इतना अधिक कर दिया था कि संथाल लोग इसे चुकाने में समक्ष नहीं थे।
  - अंग्रेजों ने वनों के उपयोग एवं कृषक भूमि के विस्तार हेतु आदिवासी क्षेत्रों में प्रवेश किया जिससे आदिवासी समुदाय में असंतोष की भावना और बढ़ गयी।
- **धार्मिक कारण:** जनजाति क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों के प्रवेश के कारण आदिवासी समुदाय को अपना धर्म नष्ट होने का खतरा था, जिसके कारण आदिवासियों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह का निर्णय लिया था।
- **राजनीतिक और समाजिक कारण:** संथाल आदिवासियों की अपनी राजनीतिक परहा पंचायत व्यवस्था थी जिसे ब्रिटिश शासन ने समाप्त कर जमींदारी व्यवस्था लागू की वही दूसरी तरफ ब्रिटिश शासन ने आदिवासियों के सामाजिक जीवन को भी प्रभावित करने का प्रयास किया जिससे संथालों में असंतोष व्याप्त था।

इस प्रकार संथाल आदिवासियों ने अपने उत्पीड़न के खिलाफ एकजुट होना शुरू कर दिया, जिसका नेतृत्व आदिवासी नेता सिद्धू, कान्हू ने किया था। इन्होंने एकजुट होकर अपनी भूमि से दिकुओं को निकालने की घोषणा की और अग्रेजों के खिलाफ विद्रोह की शुरुआत कर दी थी। 1856 तक यह विद्रोह वीरभूमि, सिंहभूमि, बाँकुड़ा आदि क्षेत्रों में तेजी से फैल गया।

1. (c) चंपारण सत्याग्रह

उत्तर: चंपारण सत्याग्रह नील कृषकों द्वारा महत्मा गाँधी के नेतृत्व में वर्ष 1917 में किया गया था। बिहार के चंपारण जिले के काश्तकार किसानों को ब्रिटिश बागान मालिकों द्वारा उनकी जोत के एक बीघे के 3/20वें हिस्से में नील की खेती करने के लिए मजबूर किया जाता था।

खंड - III

7. निम्नलिखित सारणी का ध्यानपूर्वक अध्ययन कीजिए एवं इस सारणी के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:
बार के रूप में एकसमान साबुन बनाने वाली तीन कंपनियां X, Y और Z हैं। साबुन इकाइयों की संख्या के अनुसार बेचे जाते हैं।
कुल बिक्री = विक्रय मूल्य × बेची गई इकाइयां

वर्ष	X		Y		Z	
	इकाई मूल्य (₹/इकाई)	बिक्री (₹ लाख)	इकाई मूल्य (₹/इकाई)	बिक्री (₹ लाख	इकाई मूल्य (₹/इकाई)	बिक्री (₹/लाख
2011	5	3	4	4.4	7	3.5
2012	6	3	6	4.2	6	3.6
2013	7	3.5	5	4.5	8	4
2014	8	4	7	4.9	5	5
2015	9	3.6	6	4.2	6	4.2

मान लीजिए: बाजार में केवल यही तीन कंपनियां हैं।

7. (a), वर्ष 2013 में साबुन का औसत मूल्य क्या था (₹/इकाई)?

उत्तर: वर्ष 2013 में साबुन का इकाई मूल्य,

कंपनी x = ₹ 7

कंपनी y = ₹ 5

कंपनी z = ₹ 8

∴ वर्ष 2013 में साबुन का औसत मूल्य

$= \frac{\text{x, y और z कंपनियों में साबुन के इकाई मूल्य का योग}}{\text{कंपनियों की कुल संख्या}}$

$= \frac{7+5+8}{3} = \frac{20}{3}$ = ₹ 6.67/इकाई

7. (b), X के लिए 2011 की तुलना में 2012 में बेची गई इकाइयों में कितने प्रतिशत की कमी हुई?

उत्तर: वर्ष 2012 में कंपनी X के लिए –

कुल बिक्री = ₹ 3 लाख

प्रति इकाई मूल्य = ₹ 6

∴ बेची गई इकाइयां $= \frac{\text{कुल बिक्री}}{\text{प्रति इकाई मूल्य}} = \frac{3,00,000}{6} = 50,000$

इसी प्रकार,

वर्ष 2011 में कंपनी X के लिए

∴ बेची गई इकाइयां

$= \frac{\text{कुल बिक्री}}{\text{प्रति इकाई मूल्य}} = \frac{3,00,000}{5} = 60,000$

∴ अभीष्ट प्रतिशत कमी $= \frac{60,000 - 50,000}{60,000} \times 100 = 16.67\%$

7. (c), 2013 में बेची गई कुल इकाइयों में Z का कितने प्रतिशत हिस्सा था?

उत्तर: कम्पनी X द्वारा वर्ष 2013 में बेची गई इकाइयां

$= \frac{\text{कुल बिक्री}}{\text{प्रति इकाई मूल्य}} = \frac{3,50,000}{7} = 50,000$

कंपनी Y द्वारा वर्ष 2013 में बेची गई इकाइयां

$\frac{\text{कुल बिक्री}}{\text{प्रति इकाई मूल्य}} = \frac{4,50,000}{5} = 90,000$

कंपनी Z द्वारा वर्ष 2013 में बेची गई इकाइयां

$\frac{\text{कुल बिक्री}}{\text{प्रति इकाई मूल्य}} = \frac{400000}{8} = 50,000$

अतः x, y और z द्वारा वर्ष 2013 में बेची गई कुल इकाइयां = 50,000 + 90,000 + 50,000 = 1,90,000 इकाइयां

∴ वर्ष 2013 में बेची गई कुल इकाइयों में Z का अभीष्ट प्रतिशत

$= \frac{50,000}{1,90,000} \times 100 = 26.316\%$

7. (d), किस वर्ष में Y ने इकाइयों की अधिकतम संख्या बेची?

उत्तर:

Year	Y द्वारा बेची गई इकाइयां
2011	4,40,000/4 = 1,10,000
2012	4,20,000/6 = 70,000
2013	4,50,000/5 = 90,000
2014	4,90,000/7 = 70,000
2015	4,20,000/6 = 70,000

अतः वर्ष 2011 में कंपनी Y ने इकाइयों की अधिकतम संख्या बेची है (1,10,000 = 1.1 लाख इकाइयां)।

7. (e), सारणी में दिया गया प्रति इकाई अधिकतम मूल्य प्रति इकाई न्यूनतम मूल्य से कितने प्रतिशत अधिक है?

उत्तर: प्रति इकाई अधिकतम मूल्य = 9

प्रति इकाई न्यूनतम मूल्य = 4

∴ अभीष्ट प्रतिशत $= \frac{9-4}{4} \times 100 = \frac{500}{4} = 125\%$

(अथवा)

7. नीचे दिया गया वृत्त-ग्राफ विभिन्न मदों के तहत कैलकुलेटर के निर्माण पर किए गए व्यय को दर्शाता है। वृत्त-ग्राफ का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

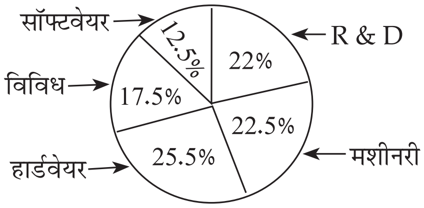

7. (a), सॉफ्टवेयर के भुगतान पर किए गए व्यय को दर्शानेवाला सेक्टर का केन्द्रीय कोण कितना है?

उत्तर: वृत्त ग्राफ से

सॉफ्टवेयर के भुगतान पर व्यय = 12.5%

∵ 100% = 360°

68वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा

सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र I

खंड - I

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए:

1. (a) भारत सरकार अधिनियम, 1858

उत्तर: 'भारत सरकार अधिनियम, 1858' ब्रिटिश सरकार के प्रत्यक्ष शासन के तहत पहला चार्टर अधिनियम था।

भारत सरकार अधिनियम 1858 के प्रमुख प्रावधान -

- ईस्ट इंडिया कंपनी का परिसमापन कर दिया गया और भारत पर उसके प्रशासन की शक्ति को समाप्त कर दिया गया।
- पिट्स इंडिया एक्ट 1784 द्वारा स्थापित द्वैध शासन प्रणाली को समाप्त कर दिया गया। भारत के पूर्ण प्रशासन का उत्तरदायित्व राज्य सचिव को हस्तांतरित कर दिया गया, जो ब्रिटिश सरकार में कैबिनेट मंत्री था और ब्रिटेन में रहता था।
- भारत में राज्य सचिव की सहायता के लिए वायसराय नामक एक नया पद सृजित किया गया। ब्रिटेन की संसद भारतीय मामलों के संबंध में प्रश्न पूछ सकती थी।
- भारत के वायसराय और गवर्नर जनरल का पद एक ही व्यक्ति संभालता था। ब्रिटिश सरकार ने व्यपगत के सिद्धांत को समाप्त कर दिया, जिसका अर्थ था कि आगे कोई प्रावधान नहीं जोड़ा जाएगा।
- योग्यता के आधार पर भारतीयों को ब्रिटिश भारतीय सरकार में सेवा करने की अनुमति दी गई थी।
- ईस्ट इंडिया कंपनी में काम करने वाले सैन्य कर्मियों को ब्रिटिश भारत सरकार के तहत नियुक्त किया गया था।
- इस अधिनियम ने भारत को एक प्रत्यक्ष ब्रिटिश उपनिवेश बना दिया।
- रानी विक्टोरिया, जो ब्रिटेन की सम्राट थीं, इस अधिनियम के परिणामस्वरूप "भारत की महारानी" शीर्षक के साथ भारत में ब्रिटिश क्षेत्रों की संप्रभु भी बन गईं।

1. (b) बिरसा मुंडा आन्दोलन

उत्तर: जनजातीय आंदोलनों में सबसे विस्तृत व संगठित बिरसा आंदोलन था। इस आंदोलन का नेतृत्व बिरसा मुंडा ने किया था। इस विद्रोह को उलगुलान भी कहते हैं, जिसका तात्पर्य महाविद्रोह से है। जागीरदारों के द्वारा खुंटकुटी के अधिकारों का उल्लंघन, औपनिवेशिक शोषण की नीतियाँ तथा बढ़ती बेगारी इस आंदोलन के मूल कारणों में प्रमुख थे। इस विद्रोह का उद्देश्य आंतरिक शुद्धीकरण, औपनिवेशिक शासकों से मुक्ति व स्वतंत्र मुंडा राज्य की स्थापना करना था।

- बिरसा मुंडा आंदोलन/विद्रोह की शुरुआत 19वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में हुई। इस विद्रोह के प्रमुख नेता बिरसा मुंडा थे, जिनका जन्म 15 नवंबर, 1875 को झारखंड में हुआ था। उनके पिता का नाम सुगना मुंडा और माता का नाम करमी था।
- वह जनजाति क्षेत्र के लोगों के बीच देवा के नाम से भी प्रसिद्ध थे। मुंडा एक जनजातीय समूह था, जो छोटानागपुर पठार क्षेत्र में निवास करते थे, जिसे दामन-ए-कोह भी कहा जाता था।

बिरसा मुंडा आंदोलन के निम्नलिखित प्रमुख कारण थे-

- **आर्थिक कारण:** मुंडा जनजातियों के मध्य खेती की एक विशेष प्रणाली, 'खूंटकटी व्यवस्था' के नाम से प्रचलित थी, जिसके अंतर्गत कृषि सामूहिक भूमि स्वामित्व के द्वारा संचालित होती थी, परंतु ब्रिटिश सरकार ने इस व्यवस्था को समाप्त कर जमींदारी व्यवस्था को लागू कर दिया, जिससे कहीं न कहीं जनजातियों में असंतोष की भावना जागृत हुई।
  - अत्यधिक भू-राजस्व होने के कारण मुंडा भुगतान करने में असमर्थ रहते थे, जिसने उन्हें महाजनों के चंगुल में फंसा दिया, परिणामतः महाजनों द्वारा उनका शोषण किया जाने लगा।
- **सामाजिक कारण:** मुंडाओं का सामाजिक जीवन, सामूहिकता तथा आत्मनिर्भरता पर आधारित था, परंतु बाहरी लोगों जिन्हें दिकु कहा जाता था, उनके हस्तक्षेप के कारण इनकी सामाजिक व्यवस्था अवनति की ओर अग्रसर हो गई।
- **धार्मिक कारण:** ईसाई मिशनरियों ने मुंडाओं का जबरन धर्म परिवर्तन करवाया। यद्यपि कुछ मुंडाओं ने दिकुओं से परेशान होकर, सुरक्षा के आश्वासन के बदले ईसाई धर्म को स्वीकार किया, परंतु जब 1886-87 में मुंडा सरदारों ने भूमि वापसी का आंदोलन चलाया तो ईसाई मिशनरियों ने इनका साथ न देकर जमींदारों का साथ दिया।
- **सांस्कृतिक कारण:** मुंडा जनजाति के लोगों की सबसे अहम् पूँजी जंगल थी। वह जंगल से संबंधित अनेक मान्यताओं को मानते थे। उनकी संस्कृति की पहचान ही जंगल था, परंतु अंग्रेजों ने उन्हें जंगल के प्रयोग से ही वंचित कर दिया।
  - इससे उनको अपनी संस्कृति में हस्तक्षेप के साथ-साथ अपने अस्तित्व पर खतरा महसूस हुआ, जिसकी भावना बिरसा मुंडा विद्रोह के रूप में फूटी।

खंड - III

7. निम्नलिखित सारणी का ध्यानपूर्वक अध्ययन कीजिए एवं सारिणी के नीचे दिए प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

पांच विषयों में छात्रों द्वारा 2012 से 2017 के दौरान प्राप्त उच्चतम एवं औसत अंक। प्रत्येक विषय में सर्वाधिक अंक 100 हैं।

वर्ष	विषय									
	अंग्रेजी		हिंदी		गणित		विज्ञान		इतिहास	
	उच्चतम (H)	औसत (A)	उच्चतम (H)	औसत (H)	उच्चतम (H)	औसत (A)	उच्चतम (H)	औसत (A)	उच्चतम (H)	औसत (A)
2012	85	65	80	60	75	60	76	50	80	50
2013	80	60	75	63	75	55	55	35	85	70
2014	83	62	80	60	75	50	50	30	82	60
2015	70	55	75	50	85	65	85	55	80	60
2016	72	50	70	50	80	55	90	60	90	65
2017	75	60	80	60	85	70	70	40	70	55

7. (a) सभी विषयों का 2015 में संयुक्त औसत अंक क्या है?

उत्तर: प्रश्न में दिये गए सारणी के आधार पर 5 विषयों का वर्ष 2015 में कुल औसत

$$= \frac{55+50+65+55+60}{5} = \frac{285}{5} = 57$$

7. (b) 2015 से 2017 में अंग्रेजी के औसत अंकों में कितने प्रतिशत की वृद्धि है?

उत्तर: वर्ष 2015 में अंग्रेजी विषय का औसत अंक = 55

वर्ष 2017 में अंग्रेजी विषय का औसत अंक = 60

∴ 2015-2017 में अभीष्ट वृद्धि (प्रतिशत)

$$= \frac{60-55}{55} \times 100 = 9.09\%$$

7. (c) किस वर्ष में गणित में उच्चतम अंक एवं उच्चतम औसत अंक का अन्तर सर्वाधिक रहा?

उत्तर: सारणी के आधार पर गणित का कुल अंक

वर्ष	गणित विषय का उच्चतम अंक	गणित विषय का औसत अंक	दोनों में अंतर
2012	75	70	5
2013	75	70	5
2014	75	70	5
2016	80	70	10
2017	85	70	15

इसलिए, सारणी से यह स्पष्ट होता है कि 2015 एवं 2017 में अभीष्ट अंतर सर्वाधिक 15 है।

7. (d) 2013 में हिन्दी में उच्चतम अंक का प्रतिशत 2016 में गणित के औसत अंक का कितना प्रतिशत है?

उत्तर: वर्ष 2013 में विषय हिन्दी में उच्चतम अंक = 75

वर्ष 2016 में गणित विषय का औसत अंक = 55

$$\therefore \text{ अभीष्ट प्रतिशत } = \frac{75}{55} \times 100 = 136.36\%$$

7. (e) यदि 2013 में 50 विद्यार्थियों ने गणित में परीक्षा दी, तो उनके अंकों का कुल योग कितना था?

उत्तर: वर्ष 2013 में गणित विषय का औसत अंक = 55

वर्ष 2013 में गणित विषय के कुल विद्यार्थी = 50

∴ अभीष्ट कुल अंकों का योग = 55 × 50 = 2,750

7. (f) किन दो वर्षों के बीच विज्ञान में उच्चतम अंकों का अंतर सर्वाधिक रहा?

वर्ष	विज्ञान विषय में उच्चतम प्राप्तांक
2012	76
2013	55
2014	50
2015	85
2016	90
2017	70

उत्तर: उपरोक्त सारणी के आधार पर,

वर्ष 2016 में विज्ञान विषय में उच्चतम प्राप्तांक = 90

वर्ष 2014 में विज्ञान विषय में उच्चतम प्राप्तांक = 50

∵ वर्ष 2014 एवं 2016 के मध्य

विज्ञान विषय में उच्चतम प्राप्तांक का अंतर = 90 – 50 = 40

अथवा

7. निम्न ग्राफ का ध्यानपूर्वक अध्ययन कीजिए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

वर्ष 2001-2006 की अवधि के दौरान कंपनियों ABC और DEF द्वारा अर्जित प्रतिशत लाभ

$$\left(\text{प्रतिशत लाभ} = \frac{\text{आय} - \text{व्यय}}{\text{व्यय}} \times 100\right)$$

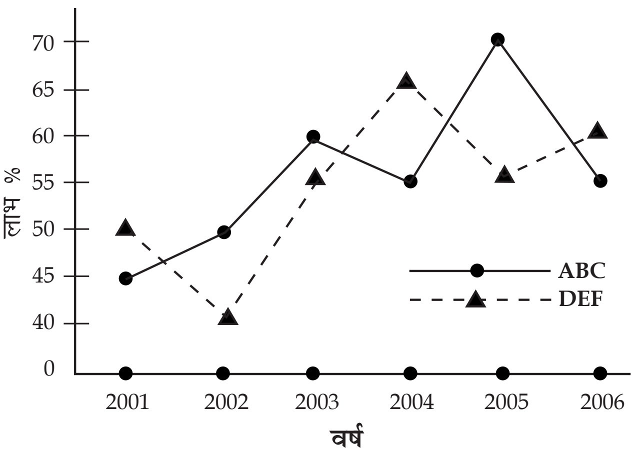

68वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा

सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र II

खंड - I

1. निम्नलिखित प्रश्नों के लघु उत्तर लिखिए:

1. (a) भारत में गत्यात्मक धर्म-निरपेक्षता को आलोचनात्मक दृष्टि से विश्लेषित कीजिये।

उत्तर: गत्यात्मक धर्मनिरपेक्षता एक आदर्श है, जिसके अनुसार राष्ट्रीय और सामाजिक व्यवस्था को धर्म से स्वतंत्र रखना चाहिए। भारत में गत्यात्मक धर्मनिरपेक्षता को सांविधानिक रूप से स्वीकृति मिली है।

भारत में गत्यात्मक धर्मनिरपेक्षता की आलोचनात्मक दृष्टि से संबंधित कुछ मुद्दे हैं, जिसे निम्न बिंदुओं द्वारा समझा जा सकता है-

- **धार्मिक समन्वय की कमी:** कुछ लोगों का मानना है कि भारत में गत्यात्मक धर्मनिरपेक्षता धार्मिक पक्षपात को बढ़ावा देती है। उनके अनुसार, गत्यात्मक धर्मनिरपेक्षता के नाम पर धार्मिक समुदायों को विशेष अधिकार मिलते हैं और धर्मीय मुद्दों को उठाने की प्रवृत्ति होती है। इसके परिणामस्वरूप, धर्मों के बीच सामंजस्य की कमी और टकराव बढ़ सकते हैं।
- **समावेशीकरण:** गत्यात्मक धर्मनिरपेक्षता में माना जाता है कि यह धर्मों के समावेशीकरण को प्रोत्साहित करती है और जाति, धर्म और धार्मिक विभाजन को बढ़ावा देती है। इसमें कहीं न कहीं धार्मिक अल्पसंख्यक समुदायों को सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं में शामिल करने की प्रवृत्ति हो सकती है, जिससे समावेशीकरण की समस्या उठ सकती है।
- **न्यायिक संरक्षण:** यह माना जाता है कि गत्यात्मक धर्मनिरपेक्षता न्यायिक संरक्षण के माध्यम से अपना उद्देश्य प्राप्त नहीं कर पा रही है। भारत की गत्यात्मक धर्मनिरपेक्षता उपरोक्त आलोचनाओं के बावजूद भारत में भाषाई, सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता को समानता के आधार पर स्वीकार करती है।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि वास्तव में गत्यात्मक धर्मनिरपेक्षता भारत की शानदार परंपरा है और यह देश की विविधता को समर्थन प्रदान करती है। भारत अपनी धर्मनिरपेक्षता के माध्यम से सामंजस्यपूर्ण एवं सहयोगी माहौल बनाए रखने में सक्षम होता है।

1. (b) भारत में क्षेत्रीय राजनीति अपनी भूमिका निभाती है। व्याख्या कीजिये।

उत्तर: भारत एक प्रजातान्त्रिक देश है। प्रजातान्त्रिक व्यवस्था में जनता का, जनता के कल्याण के लिए एवं जनता द्वारा शासन किया जाता है।

- प्रजातान्त्रिक शासन प्रणाली में सभी नागरिकों को यह अधिकार होता है कि उनकी आवाज को सुना जाए चाहे; वे किसी भी धर्म, जाति, लिंग या क्षेत्र के हों। भारत में संघीय शासन प्रणाली अपनाई गई है।
- भारत में क्षेत्रीय राजनीति केंद्रीय राजनीति के साथ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और इसका मतलब है कि यह एक स्वतंत्र और स्वायत्त स्तर की राजनीति है, जो राज्यों और संघ क्षेत्रों में कार्यरत होती है।
- क्षेत्रीय राजनीति का मुख्य उद्देश्य राज्यों और संघ क्षेत्रों के विकास को प्रोत्साहित करना और यह सुनिश्चित करना है कि स्थानीय स्तर पर नागरिकों की आवश्यकताओं और मांगों का सम्मान किया जाता है।

क्षेत्रीय राजनीति के निम्नलिखित प्रमुख पहलुओं की व्यापक भूमिका होती है-

- क्षेत्रीय सरकारें और पंचायती राज संगठन स्थानीय स्तर पर विकास के प्रति संवेदनशील होती हैं। वे स्थानीय अर्थव्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण के मामलों में कई योजनाएं बनाती हैं तथा अपने क्षेत्रों के विकास को बढ़ावा देती हैं।
- क्षेत्रीय राजनीति नागरिक प्रतिनिधित्व का माध्यम प्रदान करती है। क्षेत्रीय सदस्य और विधायकों का कार्य संघ और राज्य सरकारों के साथ मिलकर स्थानीय मुद्दों पर चर्चा करने में महत्वपूर्ण होता है।
- क्षेत्रीय सरकारें केंद्र सरकार के साथ सहयोग करके राष्ट्रीय योजनाओं के प्रयासों में शामिल होती हैं। वे केंद्र से धन और संसाधन प्राप्त करके स्थानीय विकास के लिए उपयोग करती हैं।
- विधायकों और सांसदों का चयन क्षेत्रीय चुनावों के माध्यम से होता है, जिससे स्थानीय मुद्दों को महत्वपूर्ण बनाया जाता है।
- **संस्थानीय नेतृत्व:** क्षेत्रीय राजनीति के माध्यम से स्थानीय नेता और प्रशासनिक अधिकारियों को समर्थित किया जाता है, और वे अपने क्षेत्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस तरह उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि क्षेत्रीय राजनीति भारतीय लोगों के जीवन के स्थानीय पहलुओं को समझने और सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और स्थानीय स्तर पर न्याय, विकास, और समृद्धि को प्रोत्साहित करने में मदद करती हैं।

67वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा

सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र I

खंड - I

1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के लिए उत्तरदायी कारकों का उल्लेख कीजिए। प्रारंभिक राष्ट्रवादियों के प्रति ब्रिटिश नीतियों की चर्चा कीजिए।

उत्तर: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से संबंधित प्रमुख उत्तरदायी कारण निम्नलिखित हैं-

- आधुनिक शिक्षा का प्रसार,
- ब्रिटिश शासन की नीति का प्रभाव,
- सामाजिक एवं धार्मिक आंदोलन का प्रभाव,
- मध्यवर्ग की उत्पत्ति,
- आधुनिक प्रेस का प्रभाव,
- लिंटन की प्रभावशाली नीतियां

❖ 1857 के विद्रोह से ही राष्ट्रवाद की चिंगारी निकलने लगी थी। 1870 एवं 1880 के दशकों में बने राजनीतिक संगठनों में यह चेतना और गहरी हो चुकी थी। इनमें से अधिकांश संगठनों की बागडोर वकील आदि अंग्रेजी शिक्षित पेशेवरों के हाथों में थी।

पूना सार्वजनिक सभा, इंडियन एसोसिएशन, मद्रास महाजन सभा, बाम्बे रेजीडेंसी एसोसिएशन और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस आदि इस तरह के प्रमुख संगठन थे। इन दशकों में ब्रिटिश शासन के प्रति असंतोष और ज्यादा गहरा हुआ तथा उस असंतोष के दमन के लिए ब्रिटिश शासन ने कई प्रयास किये-

❖ 1878 में आर्म्स एक्ट पारित किया गया, जिसके जरिये भारतीयों द्वारा अपने पास हथियार रखने का अधिकार छीन लिया गया।

❖ उसी वर्ष वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट भी पारित किया गया जिससे सरकार की आलोचना करने वालो को चुप कराया जा सके।

- इस कानून में प्रावधान था कि अगर किसी अखबार में कोई आपत्तिजनक चीज छपती है तो सरकार उसकी प्रिंटिंग प्रेस सहित जारी सम्पत्ति को जब्त कर सकती है।

❖ 1883 में सरकार ने इल्बर्ट बिल लागू करने का प्रयास किया। इसको लेकर भी काफी हंगामा हुआ।

- इस प्रकार अनेक घटनाएं हुई, जिससे भारतीयों में काफी असंतोष था।

❖ अनेक इतिहासकारों का तर्क है कि ए.ओ. ह्यूम और उनके साथियों द्वारा सरकार की सलाह पर ही कांग्रेस की स्थापना की गई थी। सरकार इसे सेफ्टी वाल्व के रूप में देखती थी।

❖ इस प्रकार 28 दिसंबर, 1885 को बम्बई के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत महाविद्यालय में कांग्रेस की स्थापना हुई। इसकी स्थापना से भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को नई दिशा मिली।

❖ 1885 में स्थापना के सम देश भर के 72 प्रतिनिधि इसमें शामिल हुए। प्रारंभिक नेता-दादा भाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, बदरूद्दीन तैयबजी, डब्ल्यू.सी.बनर्जी, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, रोमेशचंद्र दत्त, सुब्रमण्यम अय्यर इत्यादि थे।

2. 1857-1947 के मध्य बिहार में पाश्चात्य एवं तकनीकी शिक्षा के विस्तार के क्रम को अनुरेखित कीजिए।

उत्तर: बिहार प्राचीन काल से ही शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र रहा है एवं 5वीं शताब्दी में भारत के प्रारंभिक समय के विश्वविद्यालयों में से एक सर्वाधिक प्राचीन विश्वविद्यालय नालंदा और विक्रमशिला है। इन विश्वविद्यालयों में सीखने की परंपरा प्राचीन काल से ही शुरू हुई थी।

❖ मध्यकाल के समय नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय विश्व के महानतम विश्वविद्यालयों में से एक थे। लेकिन कुछ घटनाओं जैसे आक्रमणकारी एवं लूटपाट की वजह से शिक्षा का यह केंद्र नकारात्मक रूप से प्रभावित हुआ।

ब्रिटिश शासन के तहत बिहार में शिक्षा के क्षेत्र में कई परिवर्तन आए जैसे-

❖ बिहार में पाश्चात्य शिक्षा के विकास को बढ़ावा देने के लिए लार्ड विलियम बेंटिक के प्रयास-

- 1835 में पूर्णिया में अंग्रेजी शिक्षा के लिए विद्यालय की स्थापना की।
- 1838 में बिहार शरीफ में तथा 1840 में भागलपुर में भी अंग्रेजी विद्यालय खोले गए।
- सैनिकों के बच्चों को अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करने के लिए भागलपुर में हिल स्कूल की स्थापना की।

❖ 1861 में एटकिंसन (तत्कालीन बंगाल के शिक्षा निदेशक) ने बिहार में शिक्षा के पिछड़ेपन की समीक्षा की तथा उन्होंने कहा कि बिहार के निवासी अत्यधिक रूढ़िवादी दृष्टिकोण के कारण आधुनिक शिक्षा से काफी दूर होते जा रहे हैं। इसके कारण बिहारी लोग सरकारी नौकरियों का लाभ नहीं ले पाते हैं।

67वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा

सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र II

खंड - I

1. **"भारतीय संसद स्वायत्त विधानमंडल नहीं है। इसकी शक्तियां विशाल तो है, पर असीम नहीं है" इस कथन पर टिप्पणी कीजिए और इस पर प्रकाश डालिये कि भारतीय संसद की तुलना उसके ब्रिटिश समकक्ष से क्यों नहीं की जा सकती।**

उत्तर: भारत के संविधान की प्रस्तावना में 'संपूर्ण प्रभुत्वसंपन्न' शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका अर्थ है कि भारत के आंतरिक तथा बाह्य मामलों में भारत सरकार सार्वभौम तथा स्वतंत्र है।

- भारतीय संसदीय व्यवस्था स्वायत्त संप्रभुता संपन्न विधि-निर्मात्री संस्था नहीं है। यहां का संविधान सर्वोच्च है।
- गोलकनाथ मामले (1967) में, सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया कि अनुच्छेद 368 केवल संविधान में संशोधन करने की प्रक्रिया निर्धारित करता है और संसद को संविधान के किसी भी भाग में संशोधन करने का पूर्ण अधिकार नहीं देता है।
- **24वां संविधान संशोधन अधिनियम (1971):** गोलकनाथ निर्णय की बाध्यताओं को पार करने के लिए सरकार ने 24वां संशोधन अधिनियम पारित किया, जिसके तहत संविधान के अनुच्छेद 368 में एक प्रावधान जोड़ा गया, जिसके अनुसार संसद को किसी भी मौलिक अधिकार को छीनने का अधिकार है।
- **केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य (1973):** इस मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने गोलकनाथ मामले में अपने निर्णय की समीक्षा करके 24वें संविधान संशोधन अधिनियम की वैधता को बरकरार रखा।
  - हालाँकि, सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि संसद को संविधान के किसी भी प्रावधान में संशोधन करने की शक्ति है, लेकिन ऐसा करते समय संविधान के मूल ढांचे को बनाए रखना होगा।
- **42वां संशोधन अधिनियम (1976):** सरकार ने 1976 में 42वां संशोधन अधिनियम पारित किया, जिसके तहत अनुच्छेद 368 के तहत संसद की संविधान निर्माण शक्ति पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया गया।
- **मिनर्वा मिल्स बनाम भारत संघ (1980):** इस मामले में, सर्वोच्च न्यायालय ने 42वें संशोधन अधिनियम के प्रावधानों को अमान्य कर दिया और फैसला सुनाया कि संसद 'न्यायिक समीक्षा' की शक्ति को नहीं छीन सकती क्योंकि यह 'मूल ढांचे' का एक हिस्सा है।
- इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सर्वोच्च न्यायालय संसद की निरंकुश शक्ति पर अंकुश लगाकर न्यायिक पुनरावलोकन की प्रक्रिया द्वारा विचार करती है।

भारतीय संसद की तुलना उसके ब्रिटिश समकक्ष से नहीं की जा सकती है। इस संबंध में प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं-

- भारत का संविधान विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान है, जबकि ब्रिटिश संविधान अलिखित संविधान है।
- भारतीय संसद का निर्माण संवैधानिक है, जबकि ब्रिटिश संसद की रचना परंपराओं एवं क्रमिक विकास का परिणाम है।
- भारतीय संसद में साधारण एवं संवैधानिक कानून को पूर्ण रूप से स्पष्ट किया गया है। कुछ मामलों में सिर्फ संसद के द्वारा संशोधन नहीं किया जा सकता है, इसके लिए कम से कम 50% राज्य विधायिकाओं द्वारा बहुमत से मंजूरी लेनी पड़ती है।
- भारतीय संविधान में मौलिक अधिकार के जरिये संसद के अधिकार को सीमित किया गया है। अनुच्छेद-21 एवं 211 के आधार पर संसद द्वारा न्यायाधीशों के आचरण पर चर्चा करने पर प्रतिबंध है, परंतु संविधान की भावना से असंगत कानूनों को न्यायपालिका रद्द कर सकती हैं।
- संसद द्वारा बनाया गया कानून तब तक पूर्ण कानून नहीं बन सकता, जब तक राष्ट्रपति उसमें सहमति न दे। संविधान की 7वीं अनुसूची के मामले में संसद तब तक कानून नहीं बना सकती, जब तक राज्यों की सहमति न हो।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि भारतीय संसद व्यवहारिक रूप से ब्रिटिश संसद के समान है, लेकिन दोनों की संसदीय प्रणाली में काफी विलोमता है। संप्रभुता के मामले में भी भारतीय संसद ब्रिटिश संसद से बिल्कुल अलग है।

2. **बिहार के विशेष संदर्भ में भारत में केन्द्र-राज्य संबंधों की समस्या और भविष्य में इसकी संभावनाओं की चर्चा कीजिए। जांच कीजिए कि सहकारी संघवाद के अनुरूप समस्या को रचनात्मक रूप से कैसे संभाला जा सकता है।**

उत्तर: भारतीय संविधान के भाग 'XI' में अनुच्छेद 245 से 255 केन्द्र और राज्यों के मध्य आवंटन से संबंधित है। केन्द्र एवं राज्य अपने-अपने क्षेत्र में सर्वोच्च हैं। विधायी, कार्यपालक तथा वित्तीय इत्यादि

बिहार लोक सेवा आयोग

सामान्य अध्ययन, प्रथम प्रश्न-पत्र

भारत का आधुनिक इतिहास और भारतीय संस्कृति

प्रश्नः संथाल विद्रोह के कारण क्या थे? उसकी गति और उसके परिणाम क्या थे?

66वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2021

प्रश्न विश्लेषणः इस प्रश्न के तीन भाग है। पहले भाग में संथाल विद्रोह के कारण बताना है, दूसरे भाग में उसकी गति यानी कि विद्रोह किस प्रकार आगे बढ़ा इसकी चर्चा करनी है और तीसरे भाग में इसके परिणाम की चर्चा करनी है।

उत्तरः संथाल विद्रोह औपनिवेशिक सरकार के विरुद्ध प्रथम सशक्त जनजातीय विद्रोह था। संथाल विद्रोह का प्रमुख केंद्र संथाल परगना था। संथाल परगना पूर्वी बिहार राज्य के भागलपुर से लेकर राजमहल तक के विस्तृत क्षेत्र को कहा जाता है। इस क्षेत्र को दामन-ए-कोह के नाम से भी जाना जाता है।

संथाल विद्रोह के कारण

भू-राजस्व की नई प्रणाली एवं सरदारों को जमींदार का दर्जाः जनजातीय क्षेत्र में ब्रिटिश शासन की शुरुआत के साथ ही अंग्रेजी सरकार ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए भू-स्वामित्व की ऐसी प्रणाली बनाई जिससे जमींदारी प्रथा का जनजातीय क्षेत्र में जन्म हुआ।

उनके सरदारों को ब्रिटिश अधिकारियों ने जमींदारों का दर्जा प्रदान किया। इन जमींदारों का उपयोग सरकार अपने हित को साधने के लिए तथा अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए करती थी।

लगान एवं कर में वृद्धिः पहले गांव के लोग एक जगह का कर दिया करते थे लेकिन अब प्रत्येक व्यक्ति को अलग से कर देना होता था। उनके द्वारा उत्पादित हर वस्तु पर सरकार ने नया कर लगाया। यह कर इतना अधिक था कि पहले से वसूली जा रही लगान में लगभग 3 गुनी वृद्धि हो गई जो संथाल कृषकों की स्थिति एवं क्षमताओं से अधिक था।

बाहरी लोगों का संथाल क्षेत्रों में आनाः संथाल क्षेत्रों में बाहरी लोगों की जनसंख्या में भारी वृद्धि हुई। इन लोगों ने अपनी आर्थिक संपन्नता के कारण बहुत कम समय में अच्छा प्रभाव जमा लिया। इनके द्वारा संथालों का शोषण किया जाने लगा।

प्रशासन की उदासीनताः साहूकारों और महाजनों ने संथालों को भारी ब्याज पर धन प्रदान किया, नहीं चुकाने की स्थिति में साहूकारों महाजनों द्वारा उनकी जमीन पर कब्जा कर लिया जाने लगा। उनकी समस्याओं के प्रति प्रशासन और पुलिस उदासीनता के कारण, इनके मन में औपनिवेशिक सत्ता के प्रति भी विरोध की भावना बढ़ने लगी।

तत्कालिक कारणः एक स्थानीय साहूकार ने दरोगा की सहायता से अपने घर में मामूली चोरी करने के अपराध में संथालों को गिरफ्तार करवा दिया। आवेश में आकर एक संथाल ने उस दरोगा की हत्या कर दी। इसका समर्थन सभी संथालों ने किया और गिरफ्तार होने के भय से एक जगह इकट्ठा हो गए।

संथाल विद्रोह की गति

इस विद्रोह को संथाल परगना के सभी संथालों का समर्थन प्राप्त था। 30 जून, 1855 को भागीनीडीह में करीब 400 गांवों के 6070 प्रतिनिधि इकट्ठा हुए। इन्होंने एक स्वर में संथाल विद्रोह का समर्थन किया और इसके पक्ष में निर्णय लिया। उनके विद्रोह का मुख्य उद्देश्य था बाहरी लोगों को भगाना, विदेशियों का राज हमेशा के लिए समाप्त करना तथा न्याय एवं धर्म का राज स्थापित करना। इनके नेता सिद्धू, कान्हू चांद और भैरव थे। शीघ्र ही करीब 60000 संथाल जमा हो गए और उन्होंने महाजनों एवं जमींदारों पर हमला करना शुरू किया।

उन्होंने साहूकारों के मकानों के साथ ही कचहरी के उन दस्तावेजों को भी जला दिया जो उनकी गुलामी के प्रतीक थे। उन्होंने सरकार के अन्य स्वरूप जैसे कि पुलिस स्टेशन, रेलवे स्टेशन आदि पर भी हमला किया। उन्होंने मैदानी भागों से आने वाले लोगों की खड़ी फसलों को भी जला दिया।

राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय महत्व का वर्तमान घटना चक्र

प्रश्नः जैव ईंधन स्टारडस्ट 1.0 के द्वारा संचालित विश्व में प्रथम व्यावहारिक रॉकेट को किस संगठन द्वारा शुरू किया गया? विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिए।

66वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2021

प्रश्न विश्लेषणः इस प्रश्न में स्टारडस्ट 1.0 रॉकेट को बनाने वाली कंपनी (ब्लूशिफ्ट एयरोस्पेस कंपनी) के बारे में विस्तार से जानकारी की मांग की गई है। इसके साथ ही जैव ईंधन द्वारा संचालित स्टारडस्ट 1.0 रॉकेट की संक्षिप्त चर्चा करनी है।

उत्तरः 31 जनवरी, 2021 को अमेरिका के 'मेन' (Maine) में स्थित लोरिंग कॉमर्स सेंटर (एक पूर्व सैन्य अड्डा) से स्टारडस्ट 1.0 (Stardust 1.0) को प्रक्षेपित किया गया। यह रॉकेट ब्लूशिफ्ट एयरोस्पेस (Blue shift Aerospace) द्वारा निर्मित है।

ब्लूशिफ्ट एयरोस्पेस

इस कंपनी को मार्च 2014 में साशा डेरिक द्वारा स्थापित किया गया है। ब्लूशिफ्ट एयरोस्पेस कर्मचारी-स्वामित्व वाली अमेरिकी एयरोस्पेस फर्म है जो ब्रंसविक, मेन (Maine) में स्थित है। ब्लूशिफ्ट एयरोस्पेस की स्थापना जैव-व्युत्पन्न ईंधन द्वारा संचालित रॉकेटों के विकास के लिए की गई है, जो रॉकेटों के संचालन को पर्यावरण के लिए सुरक्षित बनाता है। यह नई प्रणोदन तकनीक ब्लूशिफ्ट को लागत-प्रतिस्पर्धी दर प्रक्षेपण में सक्षम बनाता है। इसके द्वारा विकसित सभी वाहन जैव ईंधन और तरल नाइट्रस ऑक्साइड का उपयोग हाइब्रिड रॉकेट इंजन में प्रणोदक के रूप में करेंगे।

बढ़ते हुए छोटे सैट और क्यूब सैट लॉन्च बाजारों को लक्षित करते हुए, ब्लूशिफ्ट सबऑर्बिटल साउंडिंग रॉकेट' और 'स्मॉल-लिफ्ट ऑर्बिटल रॉकेट' विकसित कर रही है। इस कंपनी को शोध कार्य के लिए नासा के एसबीआईआर अनुदान कार्यक्रम (SBIR grant program), मेन टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट और मेन स्पेस ग्रांट कंसोर्टियम से धन प्राप्त हुआ है। कंपनी ब्रंसविक नेवल एयर स्टेशन और लोरिंग एयर फोर्स बेस में सक्रिय रूप से उपग्रह प्रक्षेपण करती है।

ब्लूशिफ्ट एयरोस्पेस की उपलब्धि

- ❖ मार्च 2014 में, साशा डेरिक ने कृषि कार्य से उत्पन्न कार्बनिक अपशिष्ट से जैव ईंधन प्राप्त करने का प्रयास किया। सफलता के पश्चात इससे बने एक नए जैव-व्युत्पन्न ठोस ईंधन का परीक्षण शुरू किया।
- ❖ 2017 में, ब्लूशिफ्ट ने मेन टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट से अनुदान प्राप्त किया। इसकी मदद से अपने जैव ईंधन फॉर्मूलेशन को अनुकूलित किया।
- ❖ 2019 में, ब्लूशिफ्ट ने नासा के एसबीआईआर अनुदान कार्यक्रम की मदद से अपने मॉड्यूलर हाइब्रिड रॉकेट इंजन को अनुकूलित किया।
- ❖ कंपनी का पहला परीक्षण लॉन्च 2019 में शुरू करने की योजना थी, लेकिन COVID-19 महामारी के कारण लॉन्च को स्थगित कर दिया गया और 21 अक्टूबर, 2020 के लिए निर्धारित किया गया। 2020 में, ब्लूशिफ्ट ने अपने इंजन के 154 परीक्षण संपन्न किया और इसके पहले परीक्षण लॉन्च का प्रयास किया।
- ❖ ब्लूशिफ्ट ने 2021 की शुरुआत में स्टारडस्ट 1.0 रॉकेट का एक कम ऊंचाई वाला परीक्षण लॉन्च किया। इसके साथ ही इस कंपनी ने रॉकेट लॉन्च के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। यह जैव-ईंधन चालित प्रथम रॉकेट लॉन्च होने के साथ-साथ अमेरिका के न्यू इंग्लैंड क्षेत्र से पहला वाणिज्यिक रॉकेट लॉन्च था।
- ❖ मार्च 2021 में, ब्लूशिफ्ट को सार्वजनिक निवेश और फंडिंग के लिए खोल दिया गया, जिसका प्राथमिक लक्ष्य 500,000 अमेरिकी डॉलर और द्वितीयक लक्ष्य 1,070,000 अमेरिकी डॉलर था। जुलाई 2021 तक उन्होंने 620,000 अमेरिकी डॉलर से ज्यादा निवेश प्राप्त किया।
- ❖ कंपनी द्वारा विकसित किए जा रहे अन्य रॉकेटों में स्टारडस्ट जेनरेशन 2, स्टारलेज रूज ओर रेड ड्वार्फ शामिल हैं। ये सभी 'लो-अर्थ आर्बिट' (LEO) वाहन हैं। उपरोक्त सभी वाहनों को अधिकतम 30 किलोग्राम का पेलोड ले जाने के लिए बनाया गया है।

कंपनी की योजना 2024 की शुरुआत में हैनकॉक काउंटी या वाशिंगटन काउंटी के अनिर्धारित साइट से, लॉन्च शुरू करने की है। मेन के उच्च अक्षांश पर स्थित होने के कारण, उनके कक्षीय रॉकेट उच्च झुकाव और ध्रुवीय कक्षाओं में लॉन्च होंगे। कंपनी भविष्य में अमेरिका के केप कैनावेरल में स्थित एलसी-48 लॉन्च साइट को कम झुकाव वाली लॉन्च साइट के रूप विकसित करना चाहती है। इस तरह यह कंपनी उपग्रह प्रक्षेपण के क्षेत्र में क्रांति ला रही है।

स्टारडस्ट 1.0

यह एक लॉन्च वाहन अर्थात् एक रॉकेट है। यह 20 फीट लंबा है और इसका द्रव्यमान लगभग 250 किलोग्राम है। स्टारडस्ट 1.0 को कंपनी द्वारा वर्ष 2014 से विकसित किया जा रहा था। यह जैव ईंधन द्वारा संचालित पहला वाणिज्यिक अंतरिक्ष प्रक्षेपण है जो पारंपरिक रूप से इस्तेमाल किए जाने वाले रॉकेट ईंधन के विपरीत पर्यावरण के लिए हानिकारक नहीं है। स्टारडस्ट 1.0 रॉकेट अधिकतम 8 किग्रा. तक के भार का पेलोड ले जा सकता है। अपने पहले प्रक्षेपण के दौरान यह तीन पेलोड ले गया था। पेलोड में हाईस्कूल के छात्रों द्वारा निर्मित क्यूबसैट प्रोटोटाइप भी शामिल था। कंपन ने

बिहार लोक सेवा आयोग

सामान्य अध्ययन, द्वितीय प्रश्न-पत्र

भारतीय राजव्यवस्था

प्रश्नः ''भारत के राष्ट्रपति की भूमिका परिवार की उस बुजुर्ग के समान है जो सभी प्राधिकार रखता है किंतु यदि घर के शैतान युवा सदस्य उसकी ना सुने तो वह कुछ भी प्रभावी नहीं कर सकता है।'' मूल्यांकन कीजिए।

66वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2021

प्रश्न विश्लेषणः यह प्रश्न राष्ट्रपति एवं मंत्रिपरिषद के संविधानिक शक्तियों, दायित्वों एवं संबंध पर आधारित है। प्रश्न में इस तथ्य का मूल्यांकन करना है कि भारत के राष्ट्रपति (परिवार के बुजुर्ग) के पास सारे प्राधिकार होते हैं परंतु मंत्रिपरिषद (शैतान युवा) राष्ट्रपति की अनदेखी कर मनोनुकूल संविधानिक शक्तियों का प्रयोग एवं दायित्वों का निर्वहन कर सकते हैं।

उत्तरः संविधान के अनुसार राष्ट्रपति भारत का संवैध ानिक राज्य अध्यक्ष होता है। भारत का राष्ट्रपति घर के बुजुर्ग सदस्य के समान होता है जिसके पास सभी प्राधिकार होते हैं। संविधान के अनुच्छेद 74 के अनुसार राष्ट्रपति को उसके कार्यों में सलाह देने के लिए एक मंत्रिपरिषद की व्यवस्था होती है।

भारतीय संसदीय व्यवस्था एवं शासन प्रणाली राष्ट्रपति एवं मंत्री परिषद के सहयोग एवं समन्वय से चलता है। यह निम्नलिखित तथ्यों के माध्यम से स्पस्ट होता है-

विधायी शक्तिः संसद या राज्य विधान सभा द्वारा पास कोई भी विधेयक राष्ट्रपति के अनुमोदन के बाद ही कानून का रूप लेता है। कुछ विधायकों को सदन में प्रस्तुत करने से पूर्व राष्ट्रपति की सहमति आवश्यक होती है, जैसे नए राज्यों का निर्माण, क्षेत्र, सीमा, नाम में परिवर्तन आदि।

हालांकि इन विधायकों को लाने एवं इनके निर्माण में मंत्रिपरिषद एवं कार्यपालिका की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परंतु राष्ट्रपति के पास यह प्राधिकार होता है कि वह इन विधायकों पर हस्ताक्षर ना करेंद्य इस स्थिति में वह विधायक निरस्त हो जाता है।

नियुक्ति संबंधी अधिकारः संविधान के अनुच्छेद 75 के अनुसार प्रधानमंत्री की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। इसके साथ ही अन्य मंत्रियों की नियुक्ति प्रधानमंत्री की सलाह पर राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। आम तौर पर राष्ट्रपति प्रधानमंत्री द्वारा सुझाए व्यक्ति को मंत्री के तौर पर नियुक्त कर देता है।

वित्तीय शक्तिः राष्ट्रपति वित्त मंत्री के माध्यम से संसद में बजट प्रस्तुत करवाते हैं। राष्ट्रपति की अनुमति के बगैर कोई भी धन विधेयक लोकसभा में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है। इसके साथ ही वित्तीय परामर्श के लिए वित्त आयोग का गठन राष्ट्रपति के द्वारा किया जाता है। अनुच्छेद 267 के अनुसार आकस्मिक निधि से व्यय हेतु धन निकालने के लिए राष्ट्रपति की अनुमति आवश्यक होती है।

सैन्य शक्तिः राष्ट्रपति सेना का सर्वोच्च कमांडर होता है। संविधान के अनुसार, युद्ध-शांति घोषित करने का अधि कार राष्ट्रपति को प्राप्त है।

कूटनीतिक शक्तिः राजदूतों की नियुक्ति पत्र एवं विदेशी राजदूतों को पहचान पत्र राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद ही जारी होता है। अन्य देशों से होने वाला कोई भी समझौता राष्ट्रपति के नाम से ही होता है।

आपातकालीन शक्तियांः अनुच्छेद 352 के अनुसार, युद्ध, बाह्य आक्रमण या सशस्त्र विद्रोह की स्थिति में पूरे देश में या कुछ भागों में आपातकाल की घोषणा राष्ट्रपति द्वारा किया जा सकता है। राज्य में संवैधानिक विफलता की स्थिति में राष्ट्रपति शासन की घोषणा (अनुच्छेद 356) एवं वित्तीय संकट की स्थिति में वित्तीय आपातकाल की घोषणा (अनुच्छेद 360) राष्ट्रपति के द्वारा की जाती है।

वीटो की शक्तिः राष्ट्रपति संसद एवं राज्य विधानसभा दोनों द्वारा पारित विधायकों के संबंध में वीटो की शक्ति का प्रयोग कर सकता है। इस शक्ति के प्रयोग में राष्ट्रपति का विवेक सर्वोपरि होता है एवं मंत्री परिषद की सलाह को मानने के लिए बाध्य नहीं है।

भारतीय अर्थव्यवस्था और भारत का भूगोल

प्रश्नः बिहार सरकार के 2019-20 के आर्थिक सर्वेक्षण में यह कहा गया है कि गत 3 वर्षों में बिहार की विकास दर भारत की विकास दर से अधिक रही है। अर्थव्यवस्था के किन क्षेत्रों ने इस प्रगति में योगदान किया है? वर्णन कीजिए।

66वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2021

प्रश्न विश्लेषणः प्रश्न, अर्थव्यवस्था के तीनों क्षेत्रों (प्राथमिक द्वितीयक एवं तृतीयक) के वर्णन की मांग करना है जिन्होंने पिछले 3 वर्षों में बिहार के प्रगति में योगदान किया है। यह वर्णन बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2019-20 के आधार पर करना है।

उत्तरः 2019-20 के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, विगत 3 वर्षों में संपूर्ण देश की अपेक्षा बिहार की अर्थव्यवस्था में तेज वृद्धि दर दर्ज की गई है। पिछले 2 वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद की अनुमानित वृद्धि दर घटी है जबकि बिहार में इस दौरान दो अंकों की वृद्धि दर दर्ज हुई है। विगत 3 वर्षों में बिहार की विकास दर भारत की विकास दर से अधिक रहने में तृतीय क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, यानी कि तृतीय क्षेत्र में अधिक वृद्धि दर दर्ज की गई है। कृषि एवं विनिर्माण क्षेत्र में अपेक्षाकृत कम वृद्धि दर दर्ज की गई है।

प्राथमिक क्षेत्र

प्राथमिक क्षेत्र में 2018-19 के दौरान विकास दर कम हो गया और वृद्धि दर मात्र 0.63 प्रतिशत रह गया। वही 2018-19 में राष्ट्रीय स्तर पर वृद्धि दर 2.7% थी। कृषि एवं सहवर्ती गतिविधियां प्राथमिक क्षेत्र की मुख्य घटक है और राज्य की आबादी का बड़ा हिस्सा इसी पर निर्भर है। परंतु 2018-19 में कृषि में अनुमानित वृद्धि दर 2017-18 के 4.8% से घटकर नकारात्मक यानी कि -3.87% हो गई।

2016-17 के दौरान प्राथमिक क्षेत्र में स्थिर मूल्य पर 10% की वृद्धि दर दर्ज की गई। प्राथमिक क्षेत्र के कुल प्रतिशत में कृषि, वानिकी एवं मत्स्याखेटन मे स्थिर मूल्यों पर 11.0% वृद्धि दर दर्ज की गई। इसी अवधि के दौरान फसल, पशुधन, वानिकी एवं सिल्ली निर्माण में क्रमशः 11.9% 7.8 प्रतिशत एवं 27.1 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई।

द्वितीयक क्षेत्र

2018-19 में बिहार में द्वितीयक क्षेत्र में वृद्धि दर 6.3% दर्ज की गई, वहीं राष्ट्रीय स्तर पर यह 7.5% था। द्वितीयक क्षेत्र में विनिर्माण का प्रतिशत बढ़कर 9.44% हो गया। द्वितीयक क्षेत्र में विनिर्माण, विद्युत एवं गैस आपूर्ति, जलापूर्ति, निर्माण जैसी गतिविधियों का बिहार की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान है। 2016-17 के दौरान द्वितीयक क्षेत्र में स्थिर मूल्यों पर 14.3% वृद्धि दर दर्ज की गई। इसके अगले वित्तीय वर्ष यानी 2017-18 के दौरान स्थिर मूल्य पर 4.7% की वृद्धि दर्ज की गई।

तृतीयक क्षेत्र

2017-18 में बिहार की अर्थव्यवस्था में तृतीयक क्षेत्र की वृद्धि दर 13.10% थी तथा 2018-19 में 13.30% थी। 2017-18 में बिहार की अर्थव्यवस्था में तृतीयक क्षेत्र की वृद्धि दर 8.1% थी तथा 2018-19 में 7.5% थी। तृतीयक क्षेत्र के वायु परिवहन में 2018-19 के दौरान 36% की वृद्धि दर्ज की गई। इसी समयावधि में व्यापार एवं मरम्मत सेवाएं 17.06%, पथ परिवहन 14% और वित्तीय सेवाएं 13.8% की दर से बढ़ी। 2016-17 के दौरान तृतीयक क्षेत्र में स्थिर मूल्यों पर 7.0% की वृद्धि दर दर्ज की गई थी।

पिछले 3 वर्ष में तृतीयक क्षेत्र के विभिन्न मदो का बिहार के अर्थव्यवस्था एवं सकल राज्य घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान है। इसमें व्यापार एवं मरम्मत सेवाएं होटल एवं जलपानगृह, पथ परिवहन, जल परिवहन, वायु परिवहन, वित्तीय सेवाएं, लोक प्रशासन एवं अन्य सेवाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इससे निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बिहार की अर्थव्यवस्था में वृद्धि तृतीय क्षेत्र के कारण हुई। लेकिन सकल राज्य घरेलू उत्पाद में यह वृद्धि दर संतोषजनक नहीं कही जा सकती है।

बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है तथा इसकी जनसंख्या का अधिकांश हिस्सा कृषि कार्य में संलग्न है, अतः प्राथमिक क्षेत्र की कम वृद्धि दर कृषकों के कल्याण को विपरीत रूप से प्रभावित करती है। इसके साथ ही द्वितीय क्षेत्र में कम वृद्धि की दर राज्य के संसाधनों का समुचित रूप से उपयोग ना हो पाने को दर्शाता है।

इससे राज्य के मानव संसाधन को उत्पादक गतिविधियों में रोजगार नहीं मिल पाता है। प्राथमिक क्षेत्र में विकास की उपर्युक्त संभावनाएं हैं। राज्य संसाधनों के उपयोग से आने वाले वर्षों में अधिक वृद्धि दर हासिल कर सकता है।

प्रश्नः बिहार में व्याप्त आर्थिक एवं सामाजिक विषमताओं के मुख्य कारण क्या है? सरकार द्वारा इन असमानताओं हो को कम करने के लिए उठाए गए कदमों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

66वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2021

प्रश्न विश्लेषणः इस प्रश्न के दो भाग हैं, पहले भाग में बिहार के आर्थिक एवं सामाजिक विषमताओं के कारणों का उल्लेख करना है। दूसरे भाग में इन असामानताओं को कम करने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का तार्किक मूल्यांकन करना है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

प्रश्नः भारतवर्ष दुनिया का कोविड-19 महामारी से सबसे अधिक प्रभावित दूसरा देश है। इस जानलेवा वायरस के उन्मूलन के लिए केवल सामाजिक दूरी एवं मास्क के प्रयोग के साथ-साथ एक तेज टीकाकरण प्रक्रिया आवश्यक है। प्रधानमंत्री द्वारा प्रतिपादित मेक इन इंडिया अवधारणा को दृष्टिगत रखते हुए हमारे राष्ट्र द्वारा कोविड-19 उन्मूलन के लिए उठाई गई गतिविधियों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

66वीं बीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2021

प्रश्न विश्लेषणः यह प्रश्न मेक इन इंडिया कार्यक्रम के तहत कोविड-19 उन्मूलन के लिए की गई पहल एवं गतिविधियों के विस्तार से वर्णन की मांग करता है।

उत्तरः स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुसार, 12 अप्रैल 2021 तक भारत में कुल कोविड-19 संक्रमण की संख्या 1.35 करोड़ तक पहुंच गई। संयुक्त राज्य अमेरिका (3.12 करोड़ मामलों) के बाद वैश्विक स्तर सर्वाधिक संक्रमण के मामले थे। मेक इन इंडिया मुख्यतः निर्माण क्षेत्र पर केंद्रित है लेकिन इसका उद्देश्य देश में उद्यमशीलता को बढ़ावा देना भी है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के तहत अनेक पहल प्रारंभ किया गया।

आत्मनिर्भर भारत अभियानः इस अभियान का एक फोकस क्षेत्र चिकित्सा भी है। कोविड-19 महामारी के प्रभाव के कारण वैश्विक स्तर पर आपूर्ति श्रृंखला प्रभावित हुई थी। इसके कारण देश में साधारण पीपीई किट से लेकर दवा निर्माण में प्रयोग होने वाले एक्टिव फार्मास्यूटिकल इनग्रेडिएंट्स तक की कमी हो गई थी। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान प्रारंभ की गई तथा 20 लाख करोड़ रुपये के आर्थिक प्रोत्साहन पैकेज की घोषणा की गई।

कोविड-19 महामारी के प्रारंभ में भारत पीपीई किट का काफी बड़ी मात्रा में आयात करता था मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत अभियान तथा सरकार के प्रयास से कुछ ही दिनों में भारत अपनी आवश्यकता से ज्यादा पीपीई किट का उत्पादन करने लगा एवं जरूरतमंद देशों को निर्यात भी करने लगा। इसके अलावा मास्क सैनिटाइजर जैसी वस्तुओं का भी उत्पादन वृहद पैमाने पर होने लगा।

चिकित्सा उपकरणों का उत्पादनः कोविड-19 महामारी के प्रारंभिक चरण में सरकार द्वारा आपूर्ति किए जाने वाले अधिकांश उत्पाद देश में निर्मित नहीं हो रहे थे। इसके अतिरिक्त, महामारी के कारण बढ़ती वैश्विक मांग के कारण विदेशी बाजारों में उनकी कमी हो गई।

भारत में कोरोना जांच से संबंधित आरटी पीसीआर टेस्ट किट भी उपलब्ध नहीं थे।

कोविड-19 बीमारी से गंभीर रूप से संक्रमित व्यक्ति के चिकित्सा के लिए उच्च तकनीक युक्त उपकरणों (जैसे ऑक्सीजन कंसंट्रेटर) की आवश्यकता होती है। इस कारण सरकार ने देश में इन चिकित्सा उपकरणों के उत्पादन को बढ़ावा दिया।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, फार्मास्यूटिकल्स विभाग, उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्द्धन विभाग (DPIIT) तथा रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन ने घरेलू निर्माताओं को आवश्यक चिकित्सा उपकरणों की आपूर्ति के लिए प्रोत्साहित किया और सुविधा प्रदान की।

फार्मास्यूटिकल्स विभाग ने बड़े पैमाने पर दवाओं के घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए 6 वर्षों में 53 प्रभावकारी फार्मास्युटिकल घटक (एपीआई) के क्षेत्र में 6,940 करोड़ रुपये के वित्तीय परिव्यय के साथ उत्पादन लिंक्ड प्रोत्साहन योजना शुरू की है।

उद्यमियों को रियायती दर पर ऋण प्रदान किया गया तथा स्टार्टअप को सहायता दी गई। इसके फलस्वरूप कई नवोन्मेषी पहल के माध्यम से कम खर्च में अत्याधुनिक चि. कित्सा उपकरण देश में विकसित किए गए।

टीका विकासः कोविड-19 महामारी को नियंत्रित करने के लिए टीका विकसित करना आवश्यकता था। 'मिशन कोविड सुरक्षा' प्रारंभ किया गया। यह कोविड -19 का भारतीय वैक्सीन विकास मिशन था। इसके लिए 900 करोड़ रुपये के प्रोत्साहन पैकेज की घोषणा की गई। यह अनुदान, भारतीय कोविड-19 वैक्सीन के अनुसंधान और विकास के लिए जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) को प्रदान किया गया।

विभिन्न भारतीय कंपनियों ने भी सरकार से अनुदान प्राप्त किया। भारत बायोटेक द्वारा स्वदेशी रूप से कोवैक्सीन टीका विकसित किया गया। इसके साथ ही सिरम इंस्टीट्यूट आफ इंडिया द्वारा ऑक्सफोर्ड एस्ट्रोजेनिक के साथ मिलकर कोविडशिल्ड वैक्सीन का उत्पादन किया जा रहा है। भारत इन दोनों दवाओं का देश में प्रयोग कर रहा है इसके साथ ही वैश्विक स्तर पर इनका निर्यात भी किया जा रहा है।

कोविड 19 महामारी देश की चिकित्सा व्यवस्था की कमी को उजागर किया। सरकार एवं नीति निर्माताओ द्वारा मेक इन इंडिया पहल के तहत उपकरणों, दवाओं आदि के निर्माण बढ़ावा दिया गया, जिससे वर्तमान में यह महामारी नियंत्रण में है। हालांकि तीसरी लहर के खतरे को देखते हुए, इस प्रयास में और तेजी लाने की आवश्यकता है।